हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणदिंदापनितु केळुवॆ
परम भगवद्भक्तरु इदनादरदि केळुवुदु||
श्रीरमणि करकमल पूजित चारुचरण सरोज
ब्रह्म समीरवाणि फणींद्रवींद्र भव इंद्र मुख विनुत
नीरजभवांड उदय स्थिति कारणनॆ कैवल्यदायक
नारसिंहनॆ नमिपॆ करुणिपुदु ऎमगॆ मंगळव||1||
जगदुदरन अति विमल गुणरूपगळनु आलोचनदि
भारत निगमततिगळ अतिक्रमिसि क्रिया विशेषगळ
बगॆबगॆय नूतनव काणुत मिगॆ हरुषदिं पॊगळि हिग्गुव
त्रिगुणमानि महालकुमि संतैसलि अनुदिनवु||2||
निरुपमानंदात्म भव निर्जर सभासंसेव्य
ऋजुगणद अरसॆ सत्वप्रचुर वाणीमुखसरोजेन
गरुड शेष शशांकदळ शेखरर जनक जगद्गुरुवे
त्वच्चरणगळिगॆ अभिवंदिसुवॆ पालिपुदु सन्मतिय||3||
आरुमूरॆरॆडॊoदु साविर मूरॆरॆडु शतश्वास जपगळ
मूरु विध जीवरॊळगॆ अब्जजकल्प परियंत ता रचिसि
सत्वरिगॆ सुख संसार मिश्ररिगॆ अधमजनरिगॆ
अपार दुःखगळ ईव गुरु पवमान सलहॆम्म||4||
चतुरवदनन राणि अतिरोहित विमला विज्ञानि
निगम प्रततिगळिगभिमानि वीणापाणि ब्रह्माणि
नतिसि बेडुवॆ जननि लक्ष्मीपतिय गुणगळ तुतिपुदकॆ
सन्मतिय पालिसि नॆलॆसु नी मद्वदन सदनदलि||5||
कृतिरमण प्रद्युम्ननंदनॆ चतुरविंशति
देवतॆगळिगॆ गुरुवॆनिसुतिह मारुतन निजपत्नि
सतत हरियलि गुरुगळलि सद्गतिय पालिसि
भागवत भारत पुराण रहस्य तत्वगळु अरुपु करुणदलि ||6||
वेदपीठ विरिंचि भव शुक्र आदिसुर विज्ञानदायक
मोद चिन्मय गात्र लोकपवित्र सुचरित्र
छेद भेद विषाद कुटिलांतादि मध्य विदूर
आदानादि कारण बादरायण पाहि सत्राण||7||
क्षितियॊळगॆ मणिमंत मॊदलाद अति दुरात्मरु
ऒंदधिक विंशति कुभाष्यव रचिसॆ
नडुमनॆयॆंब ब्राह्मणन सतिय जठरदॊळु अवतरिसि भारतीरमण
मध्वभिदानदि चतुरदश लोकदलि मॆरॆद अप्रतिमगॆ वंदिसुवॆ||8||
पंचभेदात्मक प्रपंचकॆ पंचरूपात्मकनॆ दैवक
पंचमुख शक्रादिगळु किंकररु श्रीहरिगॆ
पंचविंशति तत्व तरतम पंचिकेगळनु पेळ्द
भावी विरिंचियॆनिप आनंदतीर्थर नॆनॆवॆननुदिनवु||9||
वामदेव विरिंचितनय उमामनोहर उग्र धूर्जटि
सामजाजिन वसनभूषण सुमनसोत्तंस कामहर कैलास मंदिर
सोमसूर्यानल विलोचन

कामितप्रद करुणिसॆमगॆ सदा सुमंगलव||10||
कृत्तिवासनॆ हिंदॆ नी नाल्वत्तु कल्पसमीरनलि शिष्यत्ववहिसि
अखिळ आगमार्थगळोदि जलधियॊळु हत्तु कल्पदि तपवगैदु
आदित्यरॊळगॆ उत्तमनॆनिसि
पुरुषोत्तमन परियंक पदवैदिदॆयो महदेव||11||
पाकशासन मुख्य सकल दिवौकसरिगॆ अभिनमिपॆ
ऋषिगळिगॆ एकचित्तदि पितृगळिगॆ गंधर्व क्षितिपरिगॆ
आ कमलनाभदि यतिगळानीककानमिसुवॆनु बिडदॆ
रमाकळत्रन दासवर्गकॆ नमिपॆनु अनवरत||12||
परिमळवु सुमनदॊळगॆ अनलनु अरणियॊळगॆ इप्पंते
दामोदरनु ब्रह्मादिगळ मनदलि तोरितोरदलॆ इरुतिह
जगन्नाथ विठलन करुण पडॆव मुमुक्षुजीवरु
परम भागवतरनु कॊंडाडुवुदु प्रतिदिनवु||13||
||इति श्री मंगळाचरण संधि संपूर्ण||

जयगळु आगलि अपजयगळु हॊगलि

जयदेवी रमणा ओलियलि कॊले
जयदेवी रमणा ओलियलि नम्म
विजयरायर कीर्ति मेरेयलु कॊले
दसरायर कीर्ति मेरेयलु कॊले

हरियॆ सर्वोत्तम हरियॆ परदेवते
हरिदासरेंबॊ बिरुदिन कॊले
हरिदासरेंबॊ बिरुदिन हेक्काले
हिरिबागिलोळगे नुडिसॆवु कॊले

पन्नंग शयन सुपर्ण वाहन
सुपर्ण वाहन सुखपूर्ण कॊले
सुपर्ण वाहन सुखपूर्णनाद
मोहन विठ्ठल करुणिसु कॊले ॥

कॊलु कॊले रंग कॊलु कॊले
कॊलु कॊले कृष्ण कोलु कोले ॥

गुरु मध्व रायरिगॆ नमो नमो
गुरु मध्व संततिगॆ नमो नमो||

श्रिपादरजरिगॆ गुरु व्यासराजरिगॆ
गुरु वादिराजरिगॆ नमो नमो||

राघवेंद्र रायरिगॆ वैकुंठ दासरिगॆ
पुरंदर दासरिगॆ नमो नमो||

गुरु विजय दासरिगॆ भागण्ण दासरिगॆ
श्री रंग वलिद दासरिगॆ नमो नमो||

परम वैराग्यशलि तिम्मण्ण दासरिगॆ
हुन्देकार दासरिगॆ नमो नमो||

गुरु श्रीश विठलन परम भक्तर चरण
सरसिज युगगळिगॆ नमो नमो||

राघवेंद्र गुरुरायर सेविसिरॊ सौख्यदि जीविसिरॊ ||pa||

वासोतुंगा तीरदल्लॆ निंतु वसुधैयॊळु बंदु ||a.pa||

आ सुधींद्र कर सरोज संजात वसुधैयॊळु पुनीता
दाशरथिय दासत्वव तानूहिसि दुर्मतिगळ जयिसि त्यजिसि
ई समीरमत संस्थापकरागि निंदकरनु नीगि भूसुररिगॆ
संसेवसहाचरणी कंगॊळिसुव करुणि ||1||

कुंददॆ वर मंत्रालयदल्लिरुवा करॆदल्लिगॆ बरुवा
संदरुशनदिंदलि महत्पाप परिदोडिसलापा
वृंदावन मृत्तिकॆ जलपान मुक्तिगॆ सोपान
मंद भाग्यरिगॆ दॊरॆयदिवर सेवा शरणर संजीवा ||2||

श्रीदविठ्ठलन सन्निधान पात्रा संस्तुतिसिद मात्रा
मोदबडिसुव तानिहपरदल्लि ईतगॆ समरॆल्लि
मेदिनियॊळगिन्नरसलु काणॆ पुसियिल्लॆन्नाणॆ
पादस्मरणॆ माडदवनॆ पापि ना पेळ्वॆनु||3||

सतत गणनाथ सिद्धियनीव कार्यदलि
मति प्रेरिसुवळु पार्वतीदेवि मु-
कुतिपथकॆ मनवीव महरुद्रदेवरु हरि भ-
कुतिदायकळु भारतीदेवि यु-
कुति शास्त्रगळल्लि वनजसंभवनरसि
सत्कर्मगळ नडॆसि सुज्ञान मतियित्तु
गति पालिसुव नम्म पवमाननु
चित्तदलि आनंद सुखवनीवळु रमा भ-
कुतजनरॊडॆय नम्म पुरंदरविट्ठलनु
सतत इवरॊळु निंतु ई कृतिय नडॆसुवनु ।

सत्य जगतिदु पंचभेदवु नित्य श्री गोविंदन-
कृत्यवरितु तारतम्यदि कृष्णनधिकेंदु सारिरै
जीव ईशगॆ भेद सर्वत्र - जीव जीवकॆ भेदवु
जीव जडकॆ जडजडकॆ भेद - जीव जड परमात्मगॆ । १ ।
मानुषोत्तमरधिक क्षितिपरु मनुजदेव गंधर्वरु
ज्ञानि पित्राजान कर्मज दानवारितत्त्वेशरु । २ ।
गणप मित्रनु सप्तऋषिगळु वह्नि नारद वरुणनु
इनजगॆ सम चंद्र सूर्यरु मनुसुतॆयु हॆच्चु प्रवहनु ।३।
दक्ष सम अनिरुद्ध शचि गुरु रति स्वयंभुवरार्वरु
प्राणगिंद अधिक कामनु किंचिदधिकनु इंद्रनु ।४।
देव इंद्रगॆ अधिक महरुद्र - देव सम शेषगरुडरु
केवल रुद्र शेष गरुडगॆ देवि हॆच्चु सरस्वति ।५।
वायुविगॆ समरिल्ल जगदॊळु वायुदेवरॆ ब्रह्मरु
वायुब्रह्मगॆ कोटि गुणदिंदधिक शक्तळु श्रीरमा ।६।
अनंत गुणगळिंदधिक लकुमिगॆ आदि पुरंदरविठलनु
घनरु समरू इल्ल जगदॊळु हनुमद्दृत्पद्मवासिगॆ ।७।

मोदल् वन्दिपे निनगे गननथ ॥प्।अ॥
बन्द विघ्न कलेयो गननथ ॥
मोदल् वन्दिपे निनगे गननथ ॥
हिन्दे रवननु मददिन्द निघ्न पुजिसदे ॥
सन्द रनदल्लि गननथ ॥
मधवन अग्नेयिन्द धर्मरय पोओजिसलु ॥
सधिसिद रअज्य गननथ ॥
मन्गल मुरुति गुरु रन्ग विथलन पद ॥
हिन्गदे पलिसो गननथ ॥

आ प–रंतप -- नोलुमे–यिंद स– ।
दाप–रॊक्षिग -- ळेनिसि– भगव– ।
द्रूप– गुणगळ -- महिमे– स्वपतिग -- ळान–नदि तिळि–व ॥
सौप–रणि वा -- रुणि न–गात्मज– ।
राप–नितु ब -- ण्णिसुवे– एन्न म– ।
हाप–राधग -- ळेणिस–दीयलि -- परम– मंगळ–व ॥ ३२–१५ ॥

नमः पार्वती पति नुतजनपर नमॊ नमो विरूपाक्ष
रमारमणनल्लमलभकुति कॊडु नमो विशालाक्ष
नीलकंठ त्रिशूल डमरु हस्तालंकृतरक्ष
फालनेत्र कपाल रुंडमणि माला धृत वक्ष
शीलरम्य विशाल सुगुण सल्लील सुराध्यक्ष
श्रीलकुमीशन ओलैसुव भक्तावळिगळ पक्ष

वासवनुत हरिदास ईश कैलास वास देव
दाशरथिय औपासक सुजनर पोषिप प्रभाव
भासिसुतिहुदु अशेष जीवरिगॆ ईशनॆंब भाव
श्रीशनल्लि कीलिसु मनव गिरिजेश महादेव

मृत्युंजय निन्नुत्तम पदयुग भृत्यनो सर्वत्र
हत्तिर करॆदु अपत्यनंते पॊरॆयुत्तिरो त्रिनेत्र
तॆत्तिगनंते कायुत्तिहे बाणन सत्यदि सुचरित्र
कर्तृ उडुपि सर्वोत्तम कृष्णन पौत्र कृपा पात्र

कृतिरमण प्रद्युम्ननंदनॆ चतुरविंशति
देवतॆगळिगॆ गुरुवॆनिसुतिह मारुतन निजपत्नि
सतत हरियलि गुरुगळलि सद्गतिय पालिसि
भागवत भारत पुराण रहस्य तत्वगळु अरुपु करुणदलि

चतुरवदनन राणि अतिरोहित विमला विज्ञानि
निगम प्रततिगळिगभिमानि वीणापाणि ब्रह्माणि
नतिसि बेडुवॆ जननि लक्ष्मीपतिय गुणगळ तुतिपुदकॆ
सन्मतिय पालिसि नॆलॆसु नी मद्वदन सदनदलि

पवमान पवमान
पवमान पवमान जगदा प्राणा
संकरुषण भवभयारण्य दहन |प|
श्रवणवे मोदलाद नवविध भकुतिय
तवकदिंदलि कोडु कविगळ प्रिय ||अ प||

हेम कच्चुट उपवीत धरिप मारुत कामादि वर्ग रहित
व्योमादि सर्वव्यापुत सतत निर्भीत रामचंद्रन निजदूत
याम यामके निन्नाराधिपुदके
कामिपे ऐनगिदु नेमिसि प्रतिदिन
ई मनसिगे सुखस्तोमव तोरुत
पामर मतियनु नी माणिपुदु |१|

वज्र शरीर गंभीर मुकुटधर दुर्जनवन कुठार
निर्जर मणिदया पार वार उदार सज्जनरघव परिहार
अर्जुनगोलिदंदु ध्वजवानिसि निंदु
मूर्जगवरिवंते गर्जने माडिदि
हेज्जे हेज्जेगे निन्न अब्ज पादद धूळि
मार्जनदलि भव वर्जितनेनिसो |२|
प्राण अपान व्यानोदान समान आनंद भारति रमण
नीने शर्वादि गीर्वाणाद्यमररिगे ज्ञानधन पालिप वरेण्य
नानु निरुतदलि एनेनेसगिदे
मानसादि कर्म निनगोप्पिसिदेनो
प्राणनाथ सिरिविजयविठलन
काणिसि कोडुवदु भानु प्रकाश |३|

वीर हनुम बहु पराक्रम

वीर हनुम बहु पराक्रम ||प||

सज्ञानवित्तु पालिसॆन्न जीवरोत्तम ||अ.प||

राम दूतनॆनिसि कॊंडॆ नी, राक्षसर

वनवनॆल्ल कित्तु बंदॆ नी

जानकिगॆ मुद्रॆयित्तु जगतिगॆल्ल हर्षवित्तु

चूडामणिय रामगित्तु लोकक्कॆ मुद्दॆनिसि मॆरॆव

गोपिसुतन पाद पूजिसि , गदॆय धरिसि

बकासुरन संहरिसिदॆ

द्रौपदिय मॊरॆय केळि मत्तॆ कीचकन्न कॊंदु

भीमनॆंब नाम धरिसि संग्राम धीरनागि जगदि

मध्यगेहनल्लि जनिसि नी बाल्यदल्लि

मस्करीय रूपगॊंडॆ नी

सत्यवतिय सुतन भजिसि सन्मुखदि भाष्य माडि

सज्जनर पॊरॆव मुद्दु पुरंदरविठलन दास

ह़ॊस कण्णु ऎनगॆ हच्चलेबेकु

हॊस कण्णु ऎनगॆ हच्चलेबेकु जगदंब वसुदेवसुतन कांबुदकॆ

घसणॆयागिदॆ भवविषयवारिधियॊळु शशिमुखि करुणदि काये..... अमा

परर अन्नवनुंडु परर धनवकंडु परिपरि क्षेशगळुंडु वरमहालकुमि निन्न चरणक्कॆ मॊरॆहॊक्कॆ करुणदि कण्णॆत्ति नोडॆ..... अम्मा

मंदहासिनि भवसिंधुविनॊळगिट्टु चंदवॆ अम्मा नोडुवुदु कंदनंतॆदॆन्न कुंदुगळॆणिसदॆ मंधरॊद्दरन तोरम्म..... अम्मा

अंदचंदगळॊल्लॆ बंधुबळगवॊल्लॆ बंधनकॊल्ल कारणवु इंदिरेशन पादद्वंद्वव तोरि हृन्मंदिरदॊळु बंदु निल्ले.... अम्मा

जय कॊलहपुर निलयॆ
जय कॊलहपुर निलयॆ बजदहिसहतॆतरविलयॆ
तव पदु हरिदि कलयॆ रतन rcहितवलॆयॆ||

जय जय सगरजतॆ कुरु करुन मयि बहितॆ
जगदमबबहिदहय तॆ जिवति तव पॊतॆ||1||

जय जय सगर सदन जय कनतय जितमदन
जय दुसहतनतक कदन कुनदमुकुल रदन||2||
सुरमनि नुत cहरनॆ सुमनह सनकत हरनॆ
सुसवर रनजित विनॆ सुनदरि निज किरनॆ||3||
बहजदिनदिवर सॊम बहवमुकहयमरकम
बहयमुललिविरम बहनजित मुनिबहिम||4||
कुमकुम रनजितफ़लॆ कुनजर बनदवलॊलॆ
कलदहुतमलcहिलॆ करिनतकुजनजलॆ||5||

दहरितकरुन रस पुरॆ दहनदनॊतसव दहिरॆ
दहवनिलवनिनदितकिरॆ दहिरॆ दनुजदरॆ||6||
सुरहरुतपनजरकिर सुमगॊहरपितहर
सुनदर कुनजविहर सुर परिवर||7||
वरकबरिदहरितकुसुमॆ वरकनकदहिकसुसहुमॆ
वननिलयदय बहिमॆ वदन विजित सॊमॆ||8||
मदकलबहलसगमनॆ मदहुमतहनलस नयनॆ
मरुदुलॊललकरcहरनॆ मदहुर सरस गनॆ||9||
वयगरपुरिवर निलयॆ वयसपदरपित हरुदयॆ
कुरु करुन मयि सदयॆ विविद निगम गॆयॆ||10||